केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ-227 107 उ.प्र. (भारत)

Central Institute for Subtropical Horticulture

Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-227 107 U.P. (India).

आम के बागों में गुजिया कीट का प्रबंधन

- इसके शिशु (निम्फ) तथा वयस्क मादा प्ररोहों, पत्तियों तथा फूलों का रस चूसते हैं। जब इनकी संख्या अधिक हो जाती है तो इनके द्वारा रस चूसे जाने के कारण पेड़ों के प्ररोह, पत्तियाँ तथा बौर सूख जाते हैं एवं फल नहीं लगते हैं।
- यह कीट मधु स्राव भी करता है, जिसके ऊपर काली फफूंदी पनपती है। इस कीट का प्रकोप दिसम्बर से मई महीने तक देखा जाता है।

- कीट के प्रबन्धन हेतु खरपतवार और अन्य घासों को नवम्बर माह में जुताई कर बागों से निकालने से सुप्तावस्था में रहने वाले अण्डे धूप, गर्मी एवं चीटियों द्वारा नष्ट कर दिये जाते हैं।
- दिसम्बर माह के तीसरे सप्ताह में वृक्ष के तने के आसपास क्लोरपायरीफॉस चूर्ण (1.5 प्रतिशत) 250 ग्राम/वृक्ष की दर से मिट्टी में मिला देने से अण्डों से निकलने वाले शिशु मर जाते हैं।
- पॉलीथीन की 400 गेज मोटाई वाली 30 सेमी. चौड़ी पट्टी पेड़ के तने के चारों ओर भूमि की सतह से 30 सेमी. ऊँचाई पर दिसम्बर के दूसरे–तीसरे सप्ताह में गुजिया कीट के निकलने से पहले लपेटने से निम्फ का वृक्षों पर ऊपर चढ़ना रुक जाता है। पट्टी के दोनों सिरों को सुतली से बाँधना चाहिए। इसके बाद थोड़ी ग्रीस पट्टी के निचले घेरे पर लगाने से गुजिया को पट्टी पर चढने से रोका जा सकता है। यह पट्टी बाग में स्थित सभी आम के पेड़ों तथा अन्य वृक्षों पर भी बाँध देनी चाहिए।
- यदि किसी कारण से उपरोक्त विधि न अपनाई गई हो और गुजिया पेड़ पर चढ़ गई हो तो ऐसी अवस्था में कार्बोसल्फान (0.05%) या डायमेथोएट (0.06%) का छिड़काव करना चाहिए।

Phone :0522-2841022, 2841023, 2841024 Fax :0522-2841025

website:www.cishlko.org; E-mail:director@cish.ernet.in